IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सोशल मीडिया और युवा विद्यार्थी: सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

जितेन्द्र आलोक प्रसाद प्रजापति

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

डॉ. आलोक (शोध–निर्देशक)

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बभनान, गोण्डा, उत्तर प्रदेश

शोध सार:

समकालीन समाज में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, विशेषकर सोशल मीडिया ने युवा विद्यार्थियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया का यह मंच उन्हें, आत्म अभिव्यक्ति, सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक पहचान के नए अवसर प्रदान करता है। सोशल मीडिया के माध्यम से युवा वैश्विक संस्कृति का हिस्सा बनकर अपने विचारों और दृष्टिकोणों को साझा कर रहे हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से सोशल मीडिया, संवाद, सामाजिक संबंध, और सामाजिक सहभागिता को सुदृढ़ करता है। जबकि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह विभिन्न संस्कृतियों को समझने, सांस्कृतिक जड़ों को वैश्विक मंच पर साझा करने समेत अपनी पहचान को प्रदर्शित करने का अवसर देता है। हालांकि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से सामाजिक संबंधों में दूरी, सांस्कृतिक संक्रमण, पारंपरिक मूल्यों में क्षरण जैसी चुनौतियां भी उत्पन्न होती हैं। यह अध्ययन सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की व्याख्या करने के लिए संरचित साक्षात्कार, नेटनोग्राफी एवं अन्य द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करता है। जिससे युवा विद्यार्थियों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हो रहे सकारात्मक एवं नकारात्मक परिवर्तनों का विस्तृत एवं गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सके।

मुख्य शब्द: सोशल मीडिया, युवा विद्यार्थी, सामाजिक संबंध, सांस्कृतिक संबंध।

परिचयः

आधुनिकता के इस युग में सोशल मीडिया ने संचार, मनोरंजन एवं सामाजिक संपर्क के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। "सोशल मीडिया डिजिटल उपकरणों के रूप में एक ऐसा सार्वजनिक मंच है, जो उपयोगकर्ताओं के सामाजिक संचार से संबंधित सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक है"(Landsbergen, D. 2013)। सोशल मीडिया, अपने उपयोगकर्ताओं को आभासी संसार का एक मंच प्रदान करता है, जिसमें फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, ट्विटर, लिंक्डइन, पिंटरेस्ट, व्हॉट्सएप, क्यूरा आदि सम्मिलित हैं। ये सभी मंच अपने उपयोगकर्ताओं को एक ऐसा खुला मंच प्रदान करते हैं, जहाँ वे अपने विचारों, दृष्टिकोणों को साझा करने के साथ ही अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर सकते हैं।

"सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित एक ऐसा आभासी नेटवर्क है जो अपने उपयोगकर्ताओं को तत्काल समय में अवसरवादी रूप से संपर्क स्थापित करने की अनुमति देता है, जिससे उपयोगकर्ता संकीर्ण और व्यापक दर्शकों के साथ विषय वस्तु एवं अन्य सामग्रियों को साझा करने में सक्षम होते हैं" (Carr & Hayes, 2015)। "सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों (एप्लिकेशन्स) का समूह है जो वेब 2.0 के सिद्धांत पर वैचारिकी एवं तकनीकी रूप से निर्मित है और यह इसके उपयोगकर्ताओं को विषयवस्तु (कंटेंट) निर्माण के साथ ही साझा करने की अनुमति भी देता है" (Kaplan, A. M., & Haenlein, M. 2010)।

वर्तमान समय में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो किसी न किसी रूप में सोशल मीडिया से न जुड़ा हो। यह केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग को संवाद करने, विभिन्न मुद्दों पर राय रखने, भावनाओं के आदान–प्रदान, और अकादमिक, राजनीतिक, शैक्षणिक एवं साहित्यिक विमर्श के लिए स्वतंत्र मंच प्रदान करता है। यह पारंपरिक मीडिया की तुलना में अधिक समावेशी है, क्योंकि इसमें ज्ञान, सूचना और विषयवस्तु के अधिक विकल्प उपलब्ध हैं। सोशल मीडिया नेटवर्क ने बहुत ही कम समय में समाज एवं व्यक्तियों के बीच नाटकीय परिवर्तन किए हैं। इसमें पसंद–नापसंद (लाइक–डिसलाइक), टिप्पणी (कमेंट), ऑडियो–वीडियो कॉल जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो व्यक्तियों के बीच सामाजिक संपर्क को और अधिक सुदृढ़ बनाती हैं। इन सुविधाओं के कारण इसकी लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है, जिसके कारण इसके उपयोगकर्ताओं में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसमें युवाओं की हिस्सेदारी अत्यधिक है।

पीढ़ीदर विचारधाराओं के परिप्रेक्ष्य में, परंपरागत रूप से एक पीढ़ी 10–15 वर्षों में परिवर्तित होती थी, किंतु इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल उपकरणों के बढ़ते उपयोग ने युवाओं के व्यवहार, सामाजिक मानदंड, एवं प्राथमिकताओं को तीव्रगति से बदला है। विशेष रूप से "पीढ़ी (जनरेशन) 'जेड' (1997–2012) जो इंटरनेट और सोशल मीडिया के साथ बड़े हुए हैं, जिन्हें 'डिजिटल नेटिव्स' कहा जाता है, तथा पीढ़ी (जनरेशन) 'अल्फा' (2013 से वर्तमान तक आधिकारिक रूप से इस पीढी के सदस्य युवा है) जो तकनीकी रूप से दक्ष, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में पले–बढ़े हैं, जिन्हें "ए. आई. नेटिव्स या डिजिटल नाईट्रोज" कहा जाता है" (McCrindle, 2019), के संदर्भ में देखा गया है कि यहाँ पीढ़ीगत तकनीकी परिवर्तन 5–6 वर्षों में नए व्यवहार और मानदंड स्थापित कर रहा है। इन परिवर्तनों से सामाजिक संपर्क और सांस्कृतिक मूल्यों के नए रूप उभर रहे हैं। चूँकि सोशल मीडिया पर युवाओं की सक्रियता अत्यधिक है, इसलिए उनकी जीवनशैली, सामाजिक व्यवहार, और सांस्कृतिक मूल्यों में बड़े बदलाव आए हैं, और यह बदलाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलुओं को समाहित किए हुए है।

सोशल मीडिया का यह डिजिटल मंच युवा विद्यार्थियों समेत अन्य उपयोगकर्ताओं को वैश्विक समुदाय से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है, जहां वे सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्यों को एक नए संदर्भ से समझने में सक्षम होते हैं। इसके परिणामस्वरूप उनमें सामाजिक चेतना और सामुदायिक भावना के प्रति एक नए दृष्टिकोण का निर्माण होता है, जो उन्हें सामाजिक मुद्दों पर अपनी भागीदारी और अपने विचार रखने के लिए प्रेरित करता है (Chen, M., & Xiao, X., 2022)।

सोशल मीडिया युवा विद्यार्थियों को विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों को समझने एवं उन्हें आत्मसात करने का अवसर प्रदान करता है, यह उन्हें विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सहिष्णु बनाता है और स्वयं की सांस्कृतिक पहचान एवं मूल्य को वैश्विक मंच पर साझा करने एवं स्वयं की रचनात्मकता को प्रदर्शित करने के लिए अवसर उपलब्ध करवाता है (Ma, L., 2021)। सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता और ऑनलाइन अनुचित व्यवहार के कारण युवा विद्यार्थियों को आलोचना (ट्रोलिंग) का सामना भी करना पड़ता है। जिससे उन्हें बहिष्कार, आत्मसम्मान, खराब मानसिक स्वास्थ्य जैसी अन्य समस्याओं से जूझना पड़ता है। यहाँ पर स्थापित आभासी एवं सतही संबंध उन्हें वास्तविक सामाजिक संपर्कों से दूर करती है। जिससे उनमें सामाजिक कटाव की स्थिति उत्पन्न होने की पूर्ण संभावना होती है (Ma, L., 2021)। सोशल मीडिया के अत्यधिक इस्तेमाल से मूल सांस्कृतिक मूल्यों एवं परंपराओं में परिवर्तन होने के कारण युवा अन्य विदेशी संस्कृतियों को आत्मसात करने तथा स्वयं की स्थानीय सांस्कृतिक जड़ों से दूर होने लगते हैं (Chen, M., & Xiao, X., 2022)। सोशल मीडिया पर विषय सामग्री के अतिप्रवाह एवं झूठी पहचान भी सांस्कृतिक पहचान को भ्रमित करते हैं। सोशल मीडिया पर अक्सर युवा अपनी वास्तविक पहचान को छुपाने की प्रवृत्ति अपनाते हैं जो उनके संस्कृति के प्रति समझ एवं आत्म अभिव्यक्ति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है (Ma, L., 2021)।

भारत में सोशल मीडिया के आंकड़े (जनवरी 2024 के अनुसार):

"जनवरी 2024 में भारत की जनसंख्या 1.44 अरब थी, जिसमें 48.4 प्रतिशत महिलाएँ और 51.6 प्रतिशत पुरुष थे" (UNFPA, 2024; Statistics Times, 2024)। "जनवरी 2024 में 52.4 प्रतिशत इंटरनेट पहुंच की दर के साथ कुल 751.5 मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता थे। जनवरी 2024 में भारत में सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की कुल संख्या 462 मिलियन थी, जो कुल जनसंख्या का 32.2 प्रतिशत थी। इन उपयोगकर्ताओं का प्रतिदिन सोशल मीडिया पर खर्च करने का औसत समय 2.36 घंटे था। 2024 के आरंभ में भारत में 18 वर्ष और उससे अधिक आयु के 383 मिलियन उपयोगकर्ता थे, जो उस समय के 18 वर्ष और उससे अधिक आयु की कुल जनसंख्या का 38.1 प्रतिशत थे।" (Kemp, S., 2024)।

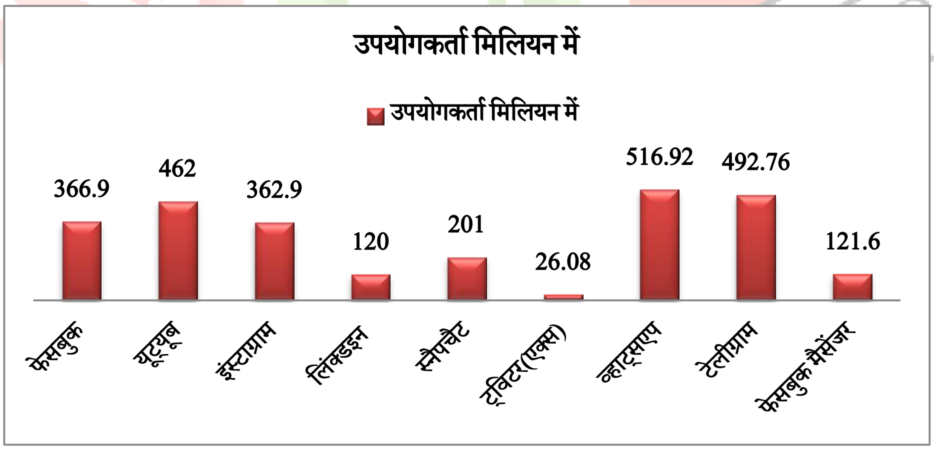

प्रमुख सोशल मीडिया मंच (प्लेटफॉर्म) के आंकड़े

ग्राफ संख्या 1: (स्रोत: डिजिटल भारत, 2024 https://datareportal.com/reports/digital-2024-india)

मेटा के अनुसार वर्ष 2024 के आरंभ में भारत में फेसबुक पर 366.9 मिलियन, यूट्यूब पर 462 मिलियन, इंस्टाग्राम पर 362.9 मिलियन, लिंक्डइन पर 120 मिलियन, स्नैपचैट पर 201 मिलियन, ट्विटर पर 26.08 मिलियन, व्हाट्सएप पर 516.92 मिलियन, टेलीग्राम पर 492.76 मिलियन और फेसबुक मैसेंजर पर 121.6 मिलियन सक्रिय उपयोगकर्ता थे।

शोध उद्देश्यः प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं।

- सोशल मीडिया द्वारा युवा विद्यार्थियों के बदलते सामाजिक संबंधों, जीवनशैली और व्यवहार का अध्ययन करना।
- सोशल मीडिया के उपयोग से युवा विद्यार्थियों में परिवर्तित सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं का अध्ययन करना।

शोध कार्य का महत्वः

यह अध्ययन युवा विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभावों पर केंद्रित है। सोशल मीडिया के उपयोग से उनकी जीवनशैली, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन, शिक्षा, सामाजिक संबंध, और सांस्कृतिक मूल्यों में तीव्र परिवर्तन हुए हैं। ये परिवर्तन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के हैं। इस अध्ययन में उन बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाएगा, जिन पर अभी तक सीमित शोध कार्य उपलब्ध है, जैसे आभासी सामाजिक संबंध, सामाजिक अलगाव, सांस्कृतिक संक्रमण, रिल्स संस्कृति, और सामाजिक संबंधों के प्रति उदासीनता आदि। यह अध्ययन विशेष रूप से महाविद्यालयों में अध्ययनरत विभिन्न शैक्षणिक पृष्ठभूमियों के युवा विद्यार्थियों पर केंद्रित है, जिससे इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

शोध प्रविधिः

उक्त शोध कार्य हेतु व्याख्यात्मक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्पों का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक विधि का उपयोग मात्रात्मक आंकड़ों के वर्णन और सटीक विश्लेषण करने के लिए किया गया है, जबकि व्याख्यात्मक विधि का उपयोग गुणात्मक पहलुओं की गहराई से समझ और उनकी विस्तृत व्याख्या के लिए किया गया है। इन दोनों अनुसंधान विधियों का समन्वय शोध के उद्देश्यों को व्यापक और सटीक रूप से पूरा करने में सहायक होगा।

अध्ययन क्षेत्र एवं प्रतिदर्श का चयनः

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के चुनार तहसील का चयन उद्देश्यपरक नमूने के आधार पर किया गया है। इस अध्ययन में सम्मिलित 100 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया है, जिसमें प्रत्येक श्रेणी (स्तर) से 50 प्रतिशत विद्यार्थी युवक और 50 प्रतिशत विद्यार्थी युवतियां हैं।

प्रदत्त संकलनः

उक्त शोध कार्य में प्रदतों के संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में प्रश्नावली, साक्षात्कार, नेटनोग्राफी आदि शामिल हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, आलेख और सरकारी आंकड़े सम्मिलित किए गए हैं।

सोशल मीडिया का सामाजिक दृष्टिकोणः

(सकारात्मक पक्ष)

- **सामाजिक संबंधों का विस्तारः**

"सोशल मीडिया वास्तविक सामाजिक संबंधों को आभासी रूप में प्रस्तुत करता है। इसने समय एवं स्थान की बाध्यता को समाप्त कर दिया है, जिससे उपयोगकर्ता परिवार, मित्र समूह, और समाज के अन्य लोगों से भौतिक रूप से दूर होने पर भी जुड़े रह सकते हैं। यह मंच सामाजिक संपर्क के साथ–साथ पहचान व्यक्त करने में भी सहायक है। युवा अपनी प्रोफाइल बनाकर, संबंधित समुदाय से जुड़कर, और अपनी विषय सामग्री साझा कर समान रुचि के अन्य लोगों से संपर्क बनाने में सफल होते हैं" (Burgess, Marwick, & Poell, 2018)।

➢ **सूचना एवं शिक्षाः**

सोशल मीडिया विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक संसाधनों और सामाजिक जानकारियों तक पहुंच का माध्यम बनकर उभरा है। युवा विद्यार्थी और शोधकर्ता अपने विषय से संबंधित अन्य छात्रों और विषय–विशेषज्ञों से संपर्क बनाने में सक्षम हुए हैं, और वे अपने शैक्षणिक क्रियाकलापों और विषय सामग्री को आपस में साझा करते हैं। "सोशल मीडिया पर विभिन्न शैक्षणिक प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं जिनमें यूट्यूब, एडएक्स और कोर्सेरा आदि सम्मिलित है। जो युवा विद्यार्थियों को मुफ्त और सशुल्क पाठ्यक्रमों तक पहुंच प्रदान करते है। सोशल मीडिया के माध्यम से अब विद्यार्थी किसी भी विषय पर वेबिनार, लाइव क्लासेज, ट्यूटोरियल्स आदि का लाभ उठा सकते है"(Kaplan, A. M., & Haenlein, M. 2010)। फेसबुक, टेलीग्राम चैनल एवं अन्य आभासी समुदायों (वर्चुअल कम्यूनिटीज) के साथ जुड़कर अध्ययन सामग्रियों का आदान – प्रदान कर सकते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से अब विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं और संगठनों से जुड़ना अत्यंत सरल हो गया है जहां विद्यार्थी, छात्रवृत्ति, प्रतियोगिताओं और शोध के अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम है।

➢ **सामाजिक जागरूकताः**

सोशल मीडिया के कारण युवाओं के मूल्यों और मनोवृत्तियों में हो रहे परिवर्तनों को नकारा नहीं जा सकता, जो परंपरागत धारणाओं से भिन्न हैं। आज यह पर्यावरण, लैंगिक समानता, मानवाधिकार, जातिवाद जैसे सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाने का सशक्त मंच बन गया है। युवा स्वयं और समाज के अन्य लोगों को जागरूक करने का काम कर रहे हैं। "सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के इस युग में सोशल मीडिया ने सामाजिक आंदोलनों को डिजिटल रूप से संगठित करने में भी भूमिका निभाई है"(Bonilla & Rosa, 2015)। उदाहरण के लिए, #MeToo, #BlackLivesMatter जैसे आंदोलन।

➢ **व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और समर्थनः**

आज के तकनीकी युग में सोशल मीडिया व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को वैश्विक मंच पर समर्थन देने का सशक्त माध्यम बन चुका है। युवा विद्यार्थी नई तकनीकी खोज, साहित्य लेखन, नृत्य, और गायन जैसी गतिविधियों में रुचि दिखाते हैं। वे अपनी कलाओं को सोशल मीडिया के माध्यम से अन्य दर्शकों तक पहुंचाते हैं। दर्शकों से प्राप्त समर्थन, प्रतिक्रिया, और सुझाव उनके मनोबल को बढ़ाते हैं, जिससे वे अपने क्षेत्र में सुधार कर अपनी मजबूत अभिव्यक्ति को अन्य दर्शकों तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं।

(नकारात्मक पक्ष)

➢ **सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों के प्रति उदासीनताः**

सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता सामाजिक जुड़ाव और सामुदायिक एकजुटता के प्रति कई चुनौतियों को जन्म देती है। युवा विद्यार्थी एवं अन्य उपयोगकर्ता सोशल मीडिया के इस डिजिटल आभासी संसार में अधिक जीवन जीने लगे हैं, जिसके कारण पारंपरिक सामाजिक संबंध कमजोर होने लगे हैं। साथ ही, सामाजिक अलगाव जैसी स्थिति देखने को मिलती है। सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता वास्तविक सामाजिक संपर्कों एवं संबंधों को सीमित कर देती है, जिससे पारिवारिक और मित्रतापूर्ण व्यवहार अत्यधिक प्रभावित हुए हैं। युवा अपने करीबी संबंधों के बजाय ऑनलाइन संबंधों को अधिक महत्व देने लगे हैं। जिसके कारण उनके प्राथमिक संबंधों में द्वितीयक संबंधों की भावना पनपने लगी है। "सोशल मीडिया "फबिंग" जैसी समस्या को भी जन्म देता है, जिसे सामाजिक परिवेश में किसी व्यक्ति से प्रत्यक्ष वार्तालाप न करके उसे हीनता का अनुभव अथवा अपमानित करने के लिए अपने फोन या सोशल मीडिया की दुनिया में व्यस्त रहने के रूप में परिभाषित किया गया है" (Aagaard, 2020)।

➢ **नकली पहचान एवं आत्मसम्मान पर प्रभावः**

सोशल मीडिया के इस दौर में, ज्यादातर युवा विद्यार्थी दोहरा जीवन जीने लगे हैं। एक उनका वास्तविक जीवन, जो समाज को प्रदर्शित होता है, और दूसरा सोशल मीडिया का आभासी एवं नकली पहचान वाला जीवन। अक्सर युवा अपनी पहचान को बढ़ाने और अधिक दर्शकों तक पहुंचने के लिए सोशल मीडिया पर नकली पहचान बनाकर अन्य लोगों से संपर्क बनाते हैं। यह उनकी वास्तविक पहचान से बिल्कुल भिन्न होती है। वे नकली जीवन में किए गए व्यवहार के मानदंड अपने वास्तविक जीवन में लागू करने और दोनों में सामंजस्य बिठाने के प्रयास करते रहते हैं। सामंजस्य न होने की स्थिति में उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचती है, और वे मानसिक आघात के शिकार होते हैं।

➢ **झूठी सूचनाओं का प्रसारः**

वर्तमान समय में सोशल मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता के कारण यहां हर कोई सक्रिय हो गया है। युवा समेत अन्य उपयोगकर्ता सोशल मीडिया से मिली जानकारियों को सत्य मान लेते हैं और प्राप्त तथ्यों की सत्यता की जांच किए बिना उन्हें अन्य लोगों से साझा कर देते हैं। सोशल मीडिया के युग में, समय एवं स्थान की बाध्यता समाप्त होने के कारण सूचनाएं अत्यधिक तीव्र गति से प्रसारित होने लगी हैं, जिसे सोशल मीडिया की भाषा में "वायरल" कहा जाता है। इस स्थिति में झूठी खबरें और गलत जानकारियों का प्रसार तेजी से होता है, जिससे लोगों में भ्रम और असंतोष की स्थिति उत्पन्न होती है। यह सामाजिक एवं राजनीतिक ध्रुवीकरण को भी बढ़ावा देता है।

➢ **गोपनीयता का हननः**

आजकल सोशल मीडिया पर लोग दिखावे का जीवन जीने लगे हैं और दूसरों के मुकाबले खुद को बेहतर साबित करने के प्रयास में अपनी निजी जानकारियां सोशल मीडिया पर साझा करने लगे हैं। वे अपनी पसंद, नापसंद, खान–पान, पहनावा, यात्रा, और पारिवारिक–सामाजिक जीवन की जानकारी साझा करते हैं। इससे उनका व्यक्तिगत जीवन गोपनीय न रहकर सार्वजनिक हो गया है। सोशल मीडिया पर निगरानी कर रहे अराजक तत्व इन जानकारियों का गलत उपयोग करने लगे हैं। कई उपयोगकर्ता साइबर बुलिंग और फिरौती जैसी समस्याओं का शिकार भी हो रहे हैं।

सोशल मीडिया का सांस्कृतिक दृष्टिकोणः

(सकारात्मक पक्ष)

➢ **ग्लोबल (वैश्विक) और लोकल (क्षेत्रीय) का समागमः**

आज सोशल मीडिया का मंच (प्लेटफॉर्म) जैसे यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि संस्कृतियों के समागम के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरे हैं। ये मंच क्षेत्रीय (लोकल) संस्कृति को ग्लोबल (वैश्विक) दर्शकों तक और वैश्विक संस्कृतियों को क्षेत्रीय दर्शकों तक पहुँचने का अवसर प्रदान करते हैं। पहले क्षेत्रीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के उपयुक्त माध्यम के अभाव में उनका दायरा एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित रहता था। किंतु अब डिजिटल प्रौद्योगिकी ने केवल एक क्लिक में लोकल से ग्लोबल तक के मार्ग प्रशस्त कर दिए हैं। अब स्थानीय लोग अपनी बोली, भाषा, खानपान, और पहनावे को वैश्विक मंच पर साझा कर रहे हैं, और अन्य स्थानों की सांस्कृतिक विशेषताओं को भी ग्रहण कर रहे हैं। बिहार का प्रसिद्ध व्यंजन लिट्टी–चोखा, उत्तर प्रदेश के बनारस की साड़ी, लखनऊ के वस्त्रों पर की गई चिकनकारी, जो इन स्थानों के सांस्कृतिक प्रतीक हैं, अब भारत के साथ–साथ विदेशों में भी लोकप्रिय हो रहे हैं। इसी तरह पश्चिमी व्यंजन जैसे पिज्जा और बर्गर, संगीत और नृत्य अब भारतीय स्वाद और रंग में ढलकर स्थानीय लोगों तक पहुँच रहे हैं। यह ग्लोकलाइजेशन यानी ग्लोबल और लोकल संस्कृतियों के समागम को दर्शाता है।

- **सांस्कृतिक जागरूकता:**

सोशल मीडिया ने विभिन्न संस्कृतियों को जानना और उनके मूल्यों एवं मानदंडों को समझना आसान बना दिया है। यह माध्यम युवा विद्यार्थियों समेत समाज के सभी वर्गों को सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान और जागरूकता सिखाता है। युवा अब भिन्न–भिन्न स्थानों की संस्कृतियों को समझने, उनकी विशेषताओं को जानने, और यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि उनकी अपनी संस्कृति अन्य से किस प्रकार भिन्न और विशिष्ट है।

- **नए सांस्कृतिक ट्रेंड्स का निर्माण:**

इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंटरनेट और सोशल मीडिया आज के समय में लोगों को संगठित करने का एक शक्तिशाली साधन बन चुका हैं। मानव इतिहास में संचार की नई तकनीकों ने हमेशा संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। 19वीं शताब्दी में, कलाकारों ने किताब पढ़ने में मग्न लोगों को अपने चित्रों में दर्शाने का प्रयास किया। इसी प्रकार, 21वीं शताब्दी में, भीड़ के बीच खड़े लोग अपने स्मार्टफोन में डूबे हुए दिखाई देते हैं, जो इस युग का प्रतीक बन चुका है। आज सोशल मीडिया के युग में लोग डिजिटल रूप से अपनी संस्कृतियों का आदान–प्रदान कर रहे हैं। रिल्स, ब्लॉग्स, और मिम्स जैसी नई डिजिटल उपसंस्कृतियों का जन्म हो चुका है, जिन्होंने सांस्कृतिक मूल्यों के आदान–प्रदान को गति दी है। उपयोगकर्ता अपने सांस्कृतिक अनुभवों और क्रियाकलापों को सोशल मीडिया पर साझा करते हैं और अन्य संस्कृतियों के मूल्यों को ग्रहण करते हैं। ये ट्रेंड्स स्थानीय स्तर से शुरू होकर वैश्विक स्तर तक फैल जाते हैं, जिससे सांस्कृतिक विविधता को और अधिक बल मिलता है।

- **सांस्कृतिक परंपराओं का डिजिटल युग में विस्तार:**

आज के डिजिटल युग में विभिन्न धार्मिक संगठन डिजिटल तकनीक के माध्यम से अपनी परंपराओं का व्यापक प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। ये संगठन अपने धार्मिक स्थलों पर ऑनलाइन पूजा, कथा, और यज्ञ की सुविधा प्रदान करते हैं। अब मीलों दूर बैठे श्रद्धालु अपनी सुविधानुसार पूजा और यज्ञ की बुकिंग कर सकते हैं और ऑनलाइन लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से इन अनुष्ठानों में भाग ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त, वैवाहिक संबंध बनाने में भी डिजिटल माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। पहले जहाँ रिश्ते प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से तय किए जाते थे, अब यह प्रक्रिया मेट्रिमोनियल वेबसाइट्स और अन्य डिजिटल साधनों के जरिये आसान हो गई है।

(नकारात्मक पक्ष)

- **सांस्कृतिक संक्रमण की भावना:**

सोशल मीडिया ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है, लेकिन इसका सबसे अधिक प्रभाव युवाओं पर पड़ा है। आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों से संपर्क बनाने में कुछ ही मिनट लगते हैं। युवा सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी पहचान को विस्तारित करने के लिए विभिन्न प्रकार के संपर्क बनाने का प्रयास करते हैं। इन संपर्कों में आने के बाद वे उनकी भाषा, बोली, संस्कृति, पहनावा, और खानपान को अपनाने लगते हैं। इस प्रक्रिया में, वे यह प्रदर्शित करना चाहते हैं कि वे ऑनलाइन मिले संपर्कों के समाज के सदस्य हैं। लेकिन इसका परिणाम यह होता है कि उनकी वास्तविक संस्कृति प्रभावित होती है, और उनकी जीवनशैली मिश्रित (मिलावटी) हो जाती है। एक ओर वे अपनी मूल संस्कृति को पूरी तरह छोड़ नहीं पाते, और दूसरी ओर वे पश्चिमी या अन्य संस्कृतियों को पूरी तरह से अपना भी नहीं पाते। इस कारण उनमें सांस्कृतिक संक्रमण की स्थिति उभरती है, जहां उनकी पहचान और जीवनशैली दोनों ही परिवर्तित और अनिश्चित हो जाती हैं।

- **संस्कृतियों का मानकीकरणः**

वैश्वीकरण के कारण विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों का आदान–प्रदान सरल हो गया है, लेकिन इसके साथ ही विभिन्न स्थानीय और पारंपरिक संस्कृतियों पर मुख्यधारा की संस्कृति का प्रभाव बढ़ने लगा है। स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों का लोप मुख्यधारा की संस्कृतियों में हो रहा है, जिससे स्थानीय संस्कृतियों की पहचान पर खतरा बढ़ने लगा है।

- **भाषा पर प्रभावः**

सोशल मीडिया पर संपर्क बनाने के लिए प्रायः संक्षिप्त और अनौपचारिक भाषा का उपयोग किया जाता है, जो पारंपरिक लेखन शैलियों से भिन्न होती है। युवा सोशल मीडिया पर इन्हीं भाषा शैलियों का उपयोग अपने मित्रों से संवाद में करते हैं, जिससे वे धीरे–धीरे पारंपरिक भाषा और उसकी लेखन शैली से दूर होते जा रहे हैं। यह उनकी भाषा, जो सांस्कृतिक प्रतीकों का अभिन्न अंग है, पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

- **सांस्कृतिक दूरीः**

सोशल मीडिया युवाओं में सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने का माध्यम बना है, लेकिन यह सांस्कृतिक दूरी को भी बढ़ा सकता है। जब सोशल मीडिया उपयोगकर्ता मुख्यधारा की संस्कृतियों के मूल्यों और मानदंडों को अपनाते हैं, तो उनमें स्थानीय और वैश्विक संस्कृतियों के बीच तुलना की प्रवृत्ति पनपने लगती है। डिजिटल दुनिया की चकाचौंध में वे मुख्यधारा की संस्कृतियों को आत्मसात करते हुए अपनी स्थानीय संस्कृति से दूर हो जाते हैं। उदाहरणः जन्मदिन के अवसर पर स्थानीय संस्कारों का पालन करने के बजाय केक काटना, जो कि पश्चिमी संस्कृति का हिस्सा है, इस बात का प्रतीक है कि कैसे युवा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से अलग हो रहे हैं।

प्रदत्त विश्लेषण व विवेचनः

अध्ययन में सहभागी उत्तरदाताओं का सामान्य परिचयः

प्रस्तुत शोध कार्य में सम्मिलित उत्तरदाताओं की कुल संख्या 100 है, जिसमें 50 प्रतिशत युवक और 50 प्रतिशत युवतियां शामिल हैं। अध्ययन में केवल उन्हीं उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है, जो किसी न किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं। ऐसा कोई भी उत्तरदाता नहीं है, जो किसी भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से जुड़ा न हो। अतः सोशल मीडिया से असंबद्ध विद्यार्थियों का प्रतिशत शून्य है। प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से जो महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकले हैं, उनका वर्णन इस प्रकार है।

प्रश्न 1: आप कौन से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल नियमित रूप से करते हैं ?

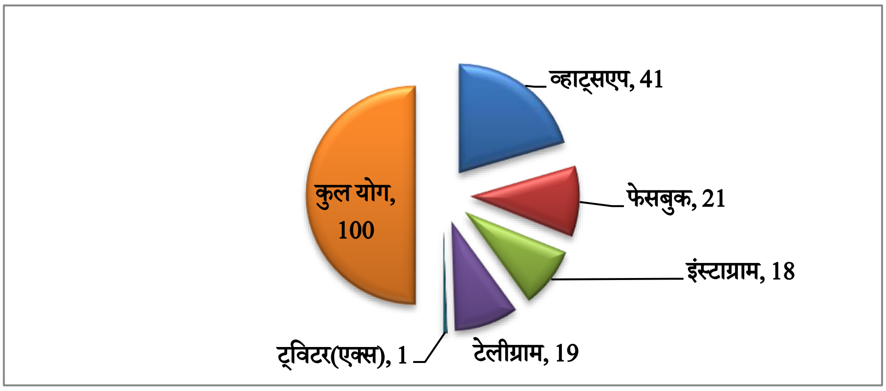

ग्राफ संख्याः 2 विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उपयोगकर्ताओं के प्रतिशत का वितरण।

उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं से यह ज्ञात होता है कि व्हाट्सएप 41 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए सबसे मनपसंद सोशल मीडिया प्लेटफार्म है। इसके बाद फेसबुक 21 प्रतिशत, टेलीग्राम 19 प्रतिशत, इंस्टाग्राम 18

प्रतिशत और ट्विटर का उपयोग 1 प्रतिशत उपयोगकर्ता करते हैं। यह दर्शाता है कि व्हाट्सएप सबसे प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफार्म के रूप में उभरा है। जबकि फेसबुक, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम भी प्रमुख रूप से प्रचलन में है, और ट्विटर तक युवाओं की पहुंच अभी भी कम दिखाई पड़ता है।

प्रश्न 2: आप प्रतिदिन औसतन कितना समय सोशल मीडिया पर व्यतीत करते हैं?

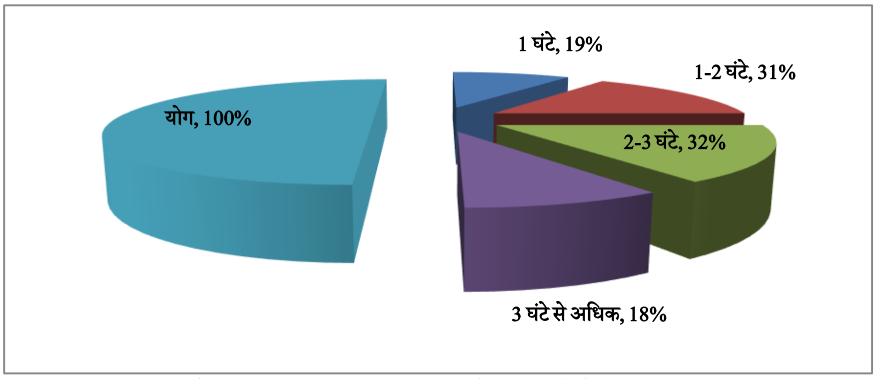

ग्राफ संख्या: 3 सोशल मीडिया पर उपयोगकर्ताओं द्वारा प्रतिदिन व्यतीत समय का विवरण।

प्रतिदिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर औसत समय व्यतीत करने के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रिया इस प्रकार है। 19 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन 1 घंटे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यतीत करते हैं। 31 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन 1—2 घंटे सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते हैं। 32 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन 2—3 घंटे तक सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। 18 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन 3 घंटे से अधिक समय सोशल मीडिया पर व्यतीत करते हैं। यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता 2 से 3 घंटे के बीच सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। यह समय सीमा सामाजिक व सांस्कृतिक आदतों, शैक्षिक प्रदर्शन, और मानसिक स्वास्थ्य पर संभावित प्रभावों का संकेत देती है। वहीं, 18 प्रतिशत उत्तरदाता 3 घंटे से अधिक समय सोशल मीडिया पर व्यतीत कर रहे हैं, जो इसकी अधिक निर्भरता या लत की ओर इशारा कर सकता है।

प्रश्न 3: आपके सोशल मीडिया इस्तेमाल करने का स्वरूप क्या है?

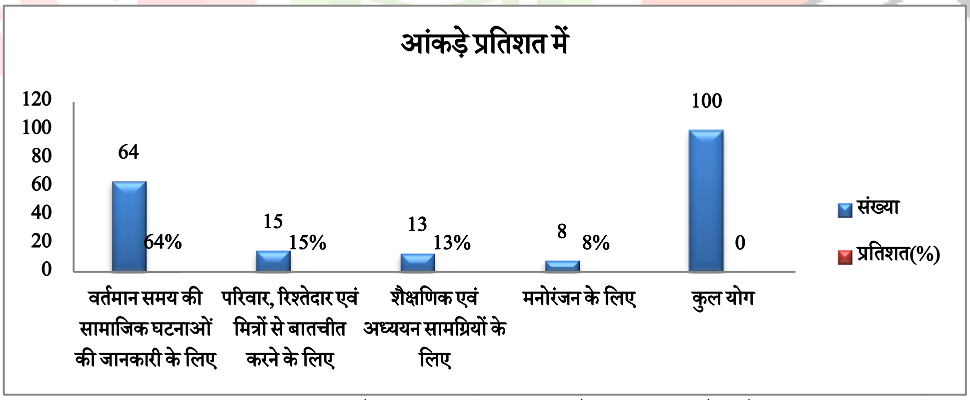

ग्राफ संख्या: 4 सोशल मीडिया इस्तेमाल करने के स्वरूप का विवरण।

उक्त प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विवरण इस प्रकार है। 64 प्रतिशत उत्तरदाता सोशल मीडिया का उपयोग वर्तमान समय की सामाजिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए करते हैं। 15 प्रतिशत उत्तरदाता इसका उपयोग परिवार, रिश्तेदार एवं मित्रों से बातचीत के लिए करते हैं। 13 प्रतिशत उत्तरदाता सोशल मीडिया का उपयोग अध्ययन एवं शैक्षणिक सामग्रियों के लिए करते हैं। 8 प्रतिशत उत्तरदाता सोशल मीडिया को मनोरंजन के साधन के रूप में उपयोग करते हैं। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया मुख्य रूप से सूचना प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है, जिसमें समाचार और सामाजिक घटनाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। हालांकि, एक महत्वपूर्ण संख्या इसे व्यक्तिगत संचार और शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए भी उपयोग कर रही है। वहीं, मनोरंजन के लिए इसका उपयोग अपेक्षाकृत कम है, जो दर्शाता है कि उत्तरदाता इसे प्राथमिक रूप से ज्ञानवर्धन और संवाद के लिए उपयोग करते हैं।

प्रश्न 4: क्या वर्तमान समय में सोशल मीडिया सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने, सामाजिक एवं समसामयिक जागरूकता को बढ़ाने में सहायक है ?

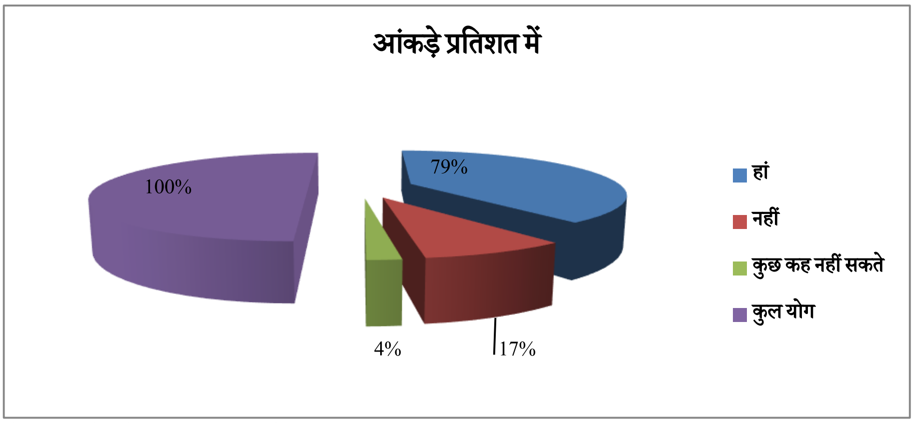

ग्राफ संख्या 5: सामाजिक संबंधों, सामाजिक एवं समसामिक जागरूकता का विवरण।

उक्त प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण इस प्रकार है। 79 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ कहा है, जो यह दर्शाता है कि वे मानते हैं कि सोशल मीडिया सामाजिक संबंधों को मजबूत करने और जागरूकता बढ़ाने में सहायक है। जबकि 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं कहा है, जिससे यह पता चलता है कि वे सोशल मीडिया को इन उद्देश्यों के लिए प्रभावी नहीं मानते। वहीं, 4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, जो इस विषय पर उनकी अनिश्चितता या निष्पक्ष दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह परिणाम दिखाता है कि अधिकांश लोग सोशल मीडिया को सामाजिक और समसामयिक मुद्दों के प्रति जागरूकता फैलाने का एक प्रभावी उपकरण मानते हैं। हालांकि, एक छोटे लेकिन महत्वपूर्ण समूह ने इस संबंध में असहमति व्यक्त की है, जो इस पर बहस और गहराई से विश्लेषण की आवश्यकता को इंगित करता है।

प्रश्न 5: क्या सोशल मीडिया भगौलिक सीमाओं के परे सामाजिक संबंध और पहचान निर्माण में सहायक है ?

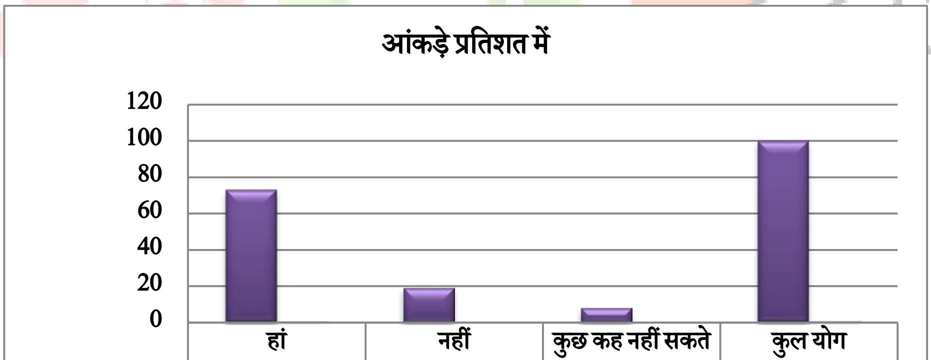

	हां	नहीं	कुछ कह नहीं सकते	कुल योग
संख्या	73	19	8	100
प्रतिशत(%)	73%	19%	8%	100%

ग्राफ संख्या 6: भौगोलिक सीमाओं के परे सामाजिक संबंध, पहचान निर्माण का विवरण।

उक्त प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण इस प्रकार है। 73 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने "हाँ" कहा है, अधिकांश लोग मानते हैं कि सोशल मीडिया भौगोलिक सीमाओं के परे सामाजिक संबंधों को मजबूत करने और पहचान निर्माण में सहायक है। वे इसे विभिन्न संस्कृतियों और विचारों से जुड़ने का मंच मानते हैं। 19 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने "नहीं" कहा है यह समूह सोशल मीडिया को प्रभावी नहीं मानता। वे इसे सतही, अस्थायी संबंधों और गोपनीयता की समस्याओं से जोड़ते हैं। 8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है यह समूह अनिर्णय या निष्पक्ष दृष्टिकोण रखता है, जो सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को पहचानता है।

प्रश्न 6: क्या सोशल मीडिया भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक मूल्यों को समझने और उन्हें वैश्विक मंच प्रदान करता है?

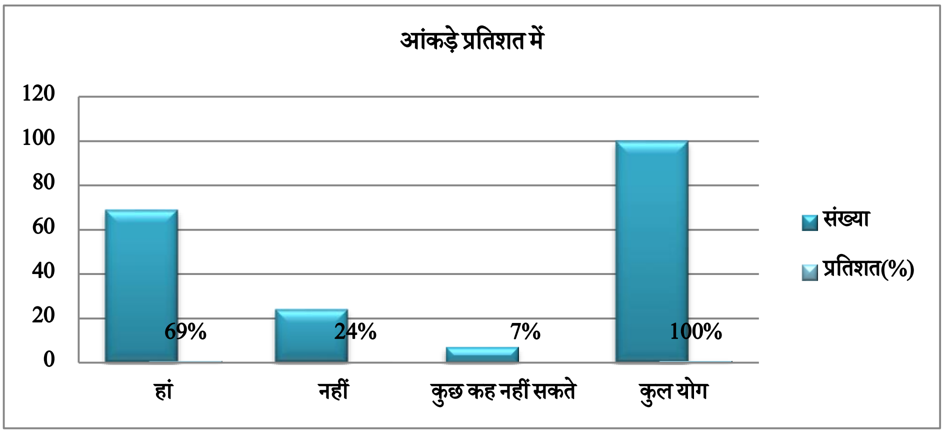

ग्राफ संख्या 7: सांस्कृतिक मूल्यों को समझने, वैश्विक मंच प्रदान करने का विवरण।

उक्त प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण इस प्रकार है। 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने "हाँ" कहा है। अधिकांश लोग मानते हैं कि सोशल मीडिया भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक मूल्यों को समझने और उन्हें वैश्विक मंच प्रदान करने में सहायक है। वे यह सोचते हैं कि सोशल मीडिया विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानकारी फैलाने, विभिन्न समुदायों के विचार साझा करने और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने "नहीं" कहा है। यह समूह सोशल मीडिया को सांस्कृतिक समझ और वैश्विक मंच प्रदान करने में प्रभावी नहीं मानता। उनका मानना है कि सोशल मीडिया पर अक्सर सांस्कृतिक गलतफहमियाँ और पूर्वाग्रह फैलते हैं, जिससे सांस्कृतिक मूल्यों की सही समझ विकसित नहीं हो पाती। 7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने "कुछ कह नहीं सकते" कहा है। यह समूह अनिर्णय या निष्पक्ष दृष्टिकोण रखता है। वे सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को पहचानते हैं लेकिन किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाते। यह उनकी अनिश्चितता या मिश्रित अनुभवों को दर्शाता है।

प्रश्न 7: सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता से कौन–कौन सी नकारात्मक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं?

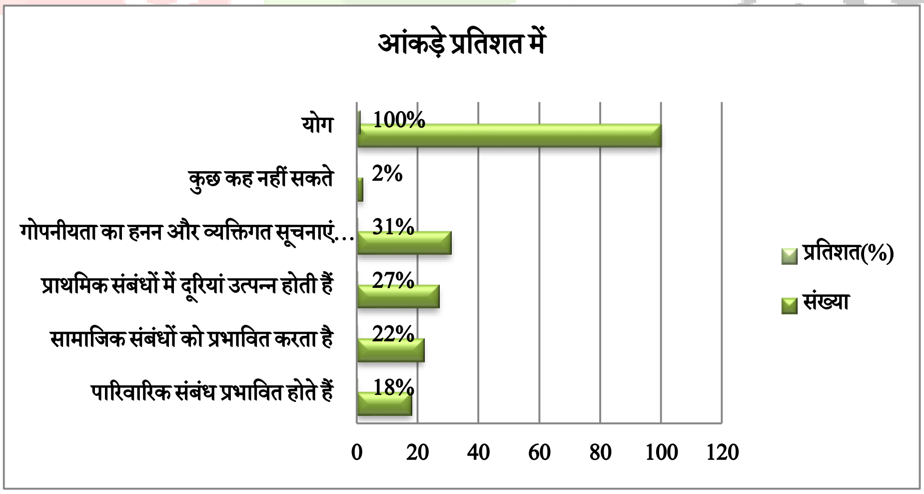

ग्राफ संख्या 8: सोशल मीडिया से उत्पन्न नकारात्मक प्रभाव का विवरण।

उक्त प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण इस प्रकार है। 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार, सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता से पारिवारिक संबंधों में खटास आ सकती है। यह इस तथ्य को रेखांकित करता है कि सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग पारिवारिक समय और संवाद को प्रभावित कर सकता है। 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया सामाजिक संबंधों को प्रभावित करता है। यह सामाजिक संबंधों की सतहीता, गलतफहमियाँ और वास्तविक जीवन की सामाजिक बातचीत में कमी को

दर्शाता है। 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि सोशल मीडिया प्राथमिक संबंधों में दूरियाँ उत्पन्न करता है। यह इस बात की ओर इशारा करता है कि ऑनलाइन संचार वास्तविक, गहरे संबंधों की जगह नहीं ले सकता और इससे निकटतम संबंधों में दूरी बढ़ सकती है। यह सबसे बड़ी चिंता है, जिसमें 31 प्रतिशत उत्तरदाता शामिल हैं। वे मानते हैं कि सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता गोपनीयता के हनन और व्यक्तिगत सूचनाओं के सार्वजनिक होने का खतरा बढ़ाती है। 2 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित हैं या इस पर कोई राय नहीं रखते। यह दर्शाता है कि कुछ लोग इस मुद्दे पर स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं रखते हैं या उन्हें इसका पर्याप्त अनुभव नहीं है।

समग्र विश्लेषणः अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता से गोपनीयता का हनन और व्यक्तिगत सूचनाओं का सार्वजनिक होना सबसे बड़ी समस्या है। इसके बाद प्राथमिक संबंधों में दूरियाँ, सामाजिक संबंधों का प्रभावित होना और पारिवारिक संबंधों का प्रभावित होना महत्वपूर्ण चिंताएँ हैं। यह प्रतिक्रिया बताती है कि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से कई नकारात्मक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं, जो व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन दोनों को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रश्न 8: सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता से सांस्कृतिक संबंधों पर कौन–कौन से नकारात्मक प्रभाव पड़ सकते हैं?

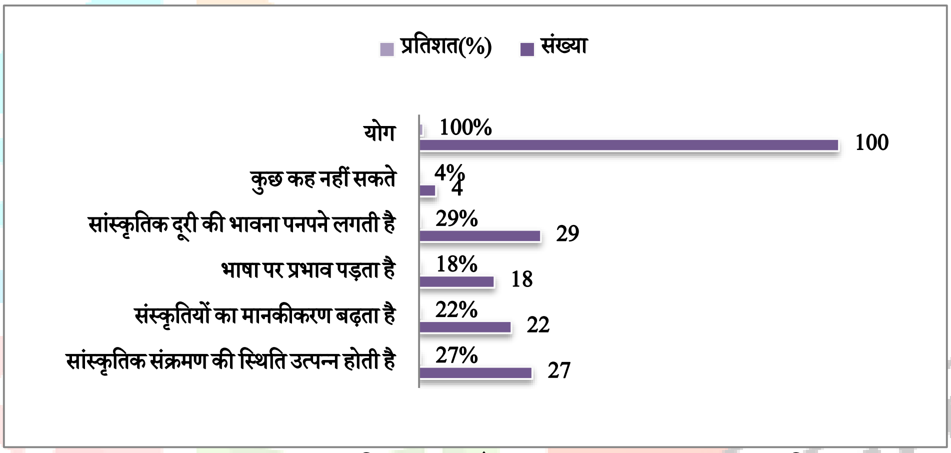

ग्राफ संख्या 9: सांस्कृतिक संबंधों नकारात्मक प्रभाव का विवरण।

उक्त प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण इस प्रकार है। 27 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है की सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता से विभिन्न संस्कृतियों के तत्व एक–दूसरे में घुल–मिल जाते हैं, जिससे सांस्कृतिक संक्रमण, सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं में मिश्रण और परिवर्तन होता है। 22 प्रतिशत उत्तरदाता का मानना है की विभिन्न संस्कृतियाँ एक दूसरे के प्रभाव में आकर समान होती जा रही हैं, जिससे उनकी विशिष्ट पहचान धुंधली हो रही है और एक सार्वभौमिक संस्कृति का विकास हो रहा है। 18 प्रतिशत उत्तरदाता कहते है की सोशल मीडिया के प्रभाव से विभिन्न भाषाओं और बोलियों में परिवर्तन आ सकता है, और पारंपरिक भाषाई शैलियाँ कमजोर हो सकती हैं। 29 प्रतिशत उत्तरदाता का मानना है की सोशल मीडिया सांस्कृतिक दूरी की भावना को बढ़ावा देता है, जिससे विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बीच अलगाव और दूरी की भावना बढ़ सकती है। 4 प्रतिशत उत्तरदाता इस मुद्दे पर अनिश्चित हैं या कोई राय नहीं रखते।

प्रश्न 9: सोशल मीडिया के उपयोग से आपके व्यक्तित्व पर कैसा प्रभाव पड़ा है?

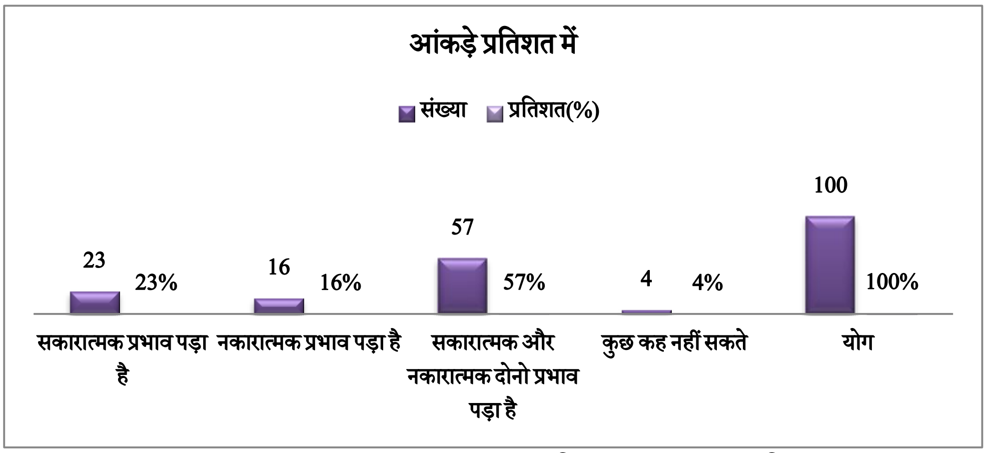

ग्राफ संख्या 10: व्यक्तित्व प्रभाव का विवरण।

उक्त प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण इस प्रकार है। 23 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इसका मतलब है कि सोशल मीडिया ने उन्हें नई जानकारी, बेहतर संचार क्षमताओं और नेटवर्किंग के अवसरों में सहायता की है। 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। यह इंगित करता है कि उन्हें सोशल मीडिया के कारण तनाव, समय की बर्बादी, या अन्य नकारात्मक अनुभव हुए हैं। 57 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके व्यक्तित्व पर दोनों प्रकार के प्रभाव पड़े हैं। यह बताता है कि सोशल मीडिया ने उनके जीवन में कुछ सकारात्मक बदलाव लाए हैं, जैसे नई जानकारी और संचार के अवसर, लेकिन साथ ही नकारात्मक प्रभाव भी डाले हैं, जैसे ध्यान की कमी और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ। 4 प्रतिशत उत्तरदाता इस मुद्दे पर अनिश्चित हैं या कोई राय नहीं रखते। यह दर्शाता है कि कुछ लोगों के लिए सोशल मीडिया का प्रभाव स्पष्ट नहीं है या उन्होंने इसे पर्याप्त रूप से नहीं समझा है।

समग्र विश्लेषण: अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके व्यक्तित्व पर मिश्रित प्रभाव पड़े हैं, जिनमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव शामिल हैं। यह परिणाम बताता है कि सोशल मीडिया का उपयोग जटिल है और इसका प्रभाव व्यक्ति विशेष के अनुभवों और उपयोग के तरीकों पर निर्भर करता है।

प्रश्न 10: क्या वर्तमान समय में सोशल मीडिया और उससे संबंधित नियमों की जानकारी रखना आवश्यक है?

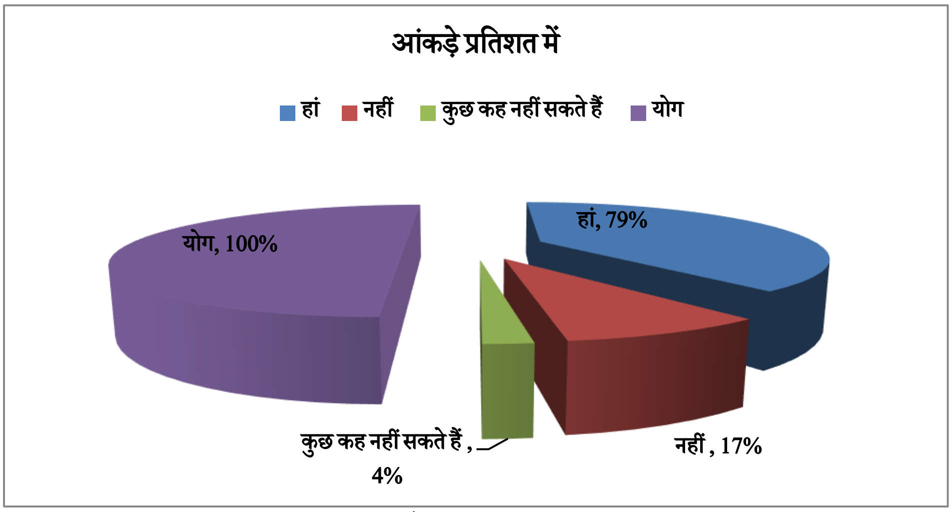

ग्राफ संख्या 11: सोशल मीडिया संबंधित जानकारी का विवरण।

उक्त प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं में 79 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया और उससे संबंधित नियमों की जानकारी रखना आवश्यक है। यह बताता है कि अधिकांश लोग सोशल मीडिया के प्रभाव और उसके नियमों की जानकारी को महत्वपूर्ण मानते हैं। इससे पता चलता है कि लोग सोशल मीडिया के उपयोग में सावधानी और जागरूकता को प्राथमिकता देते हैं। 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अस्वीकार किया है कि सोशल मीडिया और उससे संबंधित नियमों की जानकारी रखना आवश्यक नहीं है। यह समूह सोशल मीडिया के उपयोग और उसके नियमों को उतनी महत्वपूर्णता नहीं देता, शायद वे इसे अनावश्यक या कम प्रभावी मानते हैं। 4 प्रतिशत उत्तरदाता इस मुद्दे पर अनिश्चित हैं या कोई राय नहीं रखते। यह दर्शाता है कि कुछ लोग सोशल मीडिया और उसके नियमों की जानकारी की आवश्यकता पर स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं रखते हैं या उन्हें इस बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं है।

समग्र विश्लेषण: अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया और उससे संबंधित नियमों की जानकारी रखना वर्तमान समय में आवश्यक है। यह प्रतिक्रिया बताती है कि लोग सोशल मीडिया के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग के प्रति जागरूक हैं। हालांकि, एक छोटा समूह ऐसा भी है जो इसे उतना महत्वपूर्ण नहीं मानता, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस मुद्दे पर सभी की राय एक जैसी नहीं है।

निष्कर्ष:

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के युग में, सोशल मीडिया ने युवा विद्यार्थियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। इस अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया न केवल सूचना का एक प्रमुख स्रोत है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों को मजबूत करने और वैश्विक सांस्कृतिक मूल्यों एवं विचारों को आत्मसात करने का एक प्रभावी माध्यम भी है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं से यह स्पष्ट हुआ है कि अधिकांश युवा विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन में सोशल मीडिया का उपयोग समाचार, शैक्षणिक सामग्री, तथा पारिवारिक एवं मित्र संबंधों को बनाए रखने के लिए करते हैं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक एवं समसामयिक जागरूकता और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में सोशल मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण पाई गई है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ है कि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों के प्रति उदासीनता, सांस्कृतिक मूल्यों के मानकीकरण, और सांस्कृतिक संक्रमण की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। शिक्षा, मनोरंजन, सांस्कृतिक और आभासी सामाजिक संबंधों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए सोशल मीडिया का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। अंततः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया ने युवा विद्यार्थियों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है, जो समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में विचारणीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

Aagaard, J. (2020). Digital akrasia: A qualitative study of phubbing. AI & Society, 35(1), 237–244. https://doi.org/10.1007/s00146-019-00876-0

Ahuja, R. (2021). Social research (Rpt. 2021). Rawat Publications.

Bonilla, Y., & Rosa, J. (2015). #Ferguson: Digital protest, hashtag ethnography, and the racial politics of social media in the United States. American Ethnologist, 42(1), 4-17. https://doi.org/10.1111/amet.12112

Burgess, J., & Poell, T. (Eds.). (2017). The Sage handbook of social media. Sage Publications Limited.

Carr, C. T., & Hayes, R. A. (2015). Social media: Defining, developing, and divining. Atlantic Journal of Communication, 23(1), 46–65. https://doi.org/10. 1080/154 56870.201 5.972282

Chen, M., & Xiao, X. (2022). The effect of social media on the development of students' affective variables. Frontiers in Psychology, 13, Article 1010766. https://doi.org/ 10.3389 /fpsyg.2022.1010766

Julian. (2017, October 19). How to define social media – An academic summary. Retrieved from https://julianhopkins.com/how-to-define-social-media-an-academic-summary/

Kaplan, A. M., & Haenlein, M. (2010). Users of the world, unite! The challenges and opportunities of social media. Business Horizons, 53(1), 59–68. https://doi.org/10. 1016/ j.bushor.2009.09.003

Kemp, S. (2024, February 21). Digital 2024: India. DataReportal. Retrieved November 20, 2024, from https://datareportal.com/reports/digital-2024-india

Kumar, Y. (2018). Social media ka bharatiya samaj me yuwaon par prabhav. Eduzone: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal, 7(2), 142–144. Retrieved from https://eduzonejournal.com/index.php/eiprmj/article/view/544

Landsbergen, D. (2013). Social media use in government: Diversity and democracy. Public Administration Review, 73(5), 792–796.

Ma, L. (2021, October 16). The pros and cons of social media for youth. Evidence-Based Living. Retrieved from https://www.bctr.cornell.edu

McCrindle, M. (2019). The ABC of XYZ: Understanding the global generations. McCrindle Research.

Prajapati, J. A. P. (2024). Yuvaon par social media ka prabhav: ek anushilan. In A. Singh (Ed.), Samajik samsyaon ke vibhinn svarup: Bhag ek (pp. 52–60). JTS Publication.

Prensky, M. (2001). Digital natives, digital immigrants: Part 1. On the Horizon, 9(5), 1–6. https://doi.org/10.1108/10748120110424816

Statistics Times. (2024). India population statistics 2024. Retrieved from https:// statisticsti mes.com

UNFPA. (2024). State of World Population Report 2024. Retrieved from https://www.unfpa.org